# षष्ठ अध्याय

### षष्ठ अध्याय

# “ ‘बिस्रामपुर का संत’ उपन्यास में चित्रित समस्याओं का अनुशीलन !”

## प्रस्तावना -

समाज जीवन के विकास के परिणाम स्वरूप सामाजिक समस्याएँ निर्माण होती हैं और यह समस्याएँ मानव जीवन में बाधा पहुँचाती हैं । डॉ. वाय. बी. धुमाळ के मतानुसार “सन् 1966 के पश्चात पूरा भारतीय समाज जीवन परिवर्तीत हुआ । इस परिवर्तन की दौड़ में मानव जीवन में अनेक समस्याओं का निर्माण हुआ । सभी स्तरों के मानवी जीवन में नानाविध समस्याओं का बोलबाला शुरू हुआ । यांत्रिकीकरण और औद्योगीकरण ने कई समस्याओं को जन्म दिया । शिक्षित नोकरीपेशावाली नारी अपनी नयी समस्याओं को लेकर उपस्थित हुई । नैतिक एवं सांस्कृतिक मूल्य विघटन ने नयी समस्याएँ पैदा की । चुनावी राजनीति, संयुक्त परिवार की टूटन से कई समस्याएँ पैदा हुई । महँगाई, बेगारी, कृषक-जीवन, बेकारी, सेक्स, जातीय भेदाभेद, सांप्रदायिकता और मानवी मन की समस्याएँ साठोत्तरी कालखंड में जोर पकड़ती गई ।”[1] बींसवीं सदी के अंतिम दशक के हिंदी उपन्यासों में पूर्ववर्ति दशकों की अपेक्षा मानवी जीवन में तेज-गति से परिवर्तन लक्षित होता रहा, परिणामत: इस दशक में अनेक नई-नई समस्याएँ उभर उठी । प्रस्तुत लघु-शोध प्रबंध का आलोच्य उपन्यास ‘बिस्रामपुर का संत’ अंतिम दशक की रचना होने के कारण इस उपन्यास में अनेक सी नई-नई समस्याएँ देखने को मिलती हैं । हम यहाँ इन समस्याओं का संक्षिप्त में विचार करेंगे ।

## 6.1 जातिभेद की समस्या -

आज यह नहीं कहा जा सकता कि समाज से जातिभेद की भावना पूरी तरह से मिट गई है । आज भी यह जातिवाद के बंधन काफी सदृढ़ हैं । जाति-पाँति या वर्ण व्यवस्था

BARR. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY KOLHAPUR

को जन्म के आधार पर स्वीकार नहीं करना चाहिए , क्योंकि मानव यह एक ही जाति है । अत: गुण, कर्म और स्वभाव के अनुसार ही मनुष्य ऊँच-नीच होता है इसलिए मनुष्य को अपने कर्म अच्छे बनाने का प्रयत्न करना चाहिए परंतु जाति का प्रभाव इतना व्यापक और गहरा है कि समाज में व्यक्ति की पहचान उसके गुण, कर्म, योग्यता या व्यवसाय से न होकर उसकी जाति से होती है । आज भी हर जगह, हर स्तर पर किसी-न-किसी रूप में जातीयता विद्यमान है । इसी तथ्य को लेखक ने बिस्रामपुर का संत के माध्यम से उजागर किया है । ''अगर कोई हरिजन राजभवन के सोफे पर बैठ जाए या कोई पर्दा छू ले तो राज्यपाल उसका कपड़ा पदलवा ड़ालते हैं ।''[2] इससे स्पष्ट होता है कि राजनीतिक नेता लोग भी किस तरह जातीयवादी बन जाते हैं, और यहीं नेता लोग, लोगों के सामने बड़े-बड़े भाषण करते हैं कि जातियवाद नष्ट करना चाहिए, वह हमारे देश के लिए कलंक है ।

कुँवर साहब राज्यपाल पद की शपथ ले चुकने के बाद अन्य लोगों के साथ चाय लेने के लिए हिचकिचाते हैं ''अपने पद की शपथ ले चुकने के बाद गिने चुने अभ्यागतों को उनके साथ चाय पीनी थी । तभी उनके सचिव ने पाया कि वे दुचित्ते होकर बार-बार उसी की ओर देख रहें हैं । बाद में, थोड़ा एकांत होते ही, उन्होंने क्रॉकरी की ओर इशारा करके कहा, ''निहायत भौंडी है ।''[3]

इस प्रकार सवर्ण लोग ऊपरी तौर पर कहतें हैं– हम जातिभेद नहीं मानते परंतु उनका आचरण मात्र इसके विपरित दिखाई देता है ओर यहीं तथ्य लेखक ने कुँवर जयंतीप्रसाद सिंह के द्वारा स्पष्ट किया है ।

## 6.2 भ्रष्टाचार की समस्या -

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद गांधी जी के सिद्धांत सिर्फ सिद्धांत ही रह गए । बाबूराम गुप्त जी के अनुसार ''राजनीतिक भ्रष्टाचार ब्रिटिश साम्राज्यशाही से यहाँ की शासन

व्यवस्था करनेवाले राजनीतिक नेताओं और सरकार के कारिंदों सभी को उत्तराधिकार के रूप में मिला ।"[4]

'बिस्रामपुर का संत' उपन्यास में निर्मल भाई भूदान आंदोलन से जुड़े हुए हैं । भूदान आंदोलन के कारण उन्हें भाषण के लिए विदेशों में भी बुलाया जाने लगा । निर्मल भाई भूदान आंदोलन में एक कार्यकर्ता थे, बादमें इसी भूदान आंदोलन के सहारे एक बड़े आदमी बन गए, अत: वे सोने की तस्करी करने लगे । "उनकी जेबें डॉलर-नोटों से भरी रहती हैं ।"[5] अत: जो भी आमदनी उन्हें मिलती वह सब अपने स्वार्थ के लिए उपयोग करते हैं । निर्मल भाई भ्रष्टाचार में इस तरह खो जाते हैं कि, उन्हें इतनी प्रसिद्धि किसके आधार पर मिली यह सोचने के लिए भी उनके पास वक्त नहीं रहता ।

इस तरह 'बिस्रामपुर का संत' उपन्यास के प्रमुख पात्र कुँवर साहब की भतीजी केतकी अमरिका से कुछ दिन गाँव आती है और चली जाती है लेकिन उस पर जो खर्च होता है वह सरकार का ही, कुँवर साहब का नहीं । इससे स्पष्ट होता है कि राजनीति से जुड़े लोगों का जीवन और साधारण लोगों का जीवन किस तरह है । राजनीति में स्वार्थ, भ्रष्टाचार की प्रवृत्ति बढ़ रही है । आज भ्रष्टाचार के परिणाम स्वरूप स्वार्थ, छलकपट, कूटिलता से पूरा राजनीतिक माहौल गंधला गया है । बीसवीं सदी के अंतिम दशक में राजनीति में भ्रष्टाचार को प्रश्रय मिला जिससे राजनीति का गुनहागारीकरण हुआ । राजनीतिकी प्रश्रय से भ्रष्टाचार का जाल बढने लगा । इसका प्रतीबिंब इस समस्या में उभरा हुआ दिखाई देता है ।

## 6.3 राजनीतिक नेताओं की कुटनीति की समस्या -

लेखक शुक्ल जी ने राजनीतिक नेताओं की कुटनीति का उनके ढोंगीपण का अच्छा उदाहरण 'बिस्रामपुर का संत' उपन्यास में प्रस्तुत समस्या द्वारा उभारा है ।

भूदान आंदोलन में गवर्नर स्तर तक के लोग आने अपने फायदों को लेकर शरीक हुए । भूदान आंदोलन के नाम पर स्वार्थी लोगों ने अपनी जेबे भर ली । कोई व्यक्ति कुटीर उद्योग के नाम पर पाँच लाख का अनुदान देता है, कोई दस्तकार प्रशिक्षण के नामपर दस लाख देता है तो कोई सामाजिक वानिकी के नाम पर बीस लाख घोषित करता है पर इन लाखों का क्या हो रहा है किसी को भी पता चलता नहीं ।

इससे स्पष्ट होता है कि नेता लोग आम आदमी के नाम पर बनी योजनाओं का पैसा लुटते रहते हैं । इस देश की आम जनता इनके खिलाफ नारे देती है, सिर्फ नारे !

नेताओं की इस कुटनीति के साथ स्वार्थी नेताओं की ढोंगी वृत्ति का भी एक अच्छा उदाहरण लेखक ने कुँवर साहब के द्वारा स्पष्ट किया है । कुँवर साहब बिस्रामपुर जाकर समाजसेवा करना चाहते हैं, वे एकबार विवेक से कहते है – "उस दिन तुम किसी को मेरा प्राइवेट सेक्रेटरी बनाना चाहते थे । मैंने इसीलिए मना कर दिया था । दिल्ली से इतनी दूर उस गाँव में मेरे साथ कौन टिकेगा ? ऑफिस के नाम पर वहाँ दो-तीन लोग हैं ही । वहाँ मुझे किसी निजी सहायक की जरूरत हुई तो पास के शहर से ही कोई स्थानीय आदमी चुन लूँगा । यहीं ठिक रहेगा । क्यों ?"[6] अपनी पोल न खुलने के लिए वे इस प्रकारकी कुटनीतिक और ढोंगीवृत्ति अपनाते है ।

## 6.4 राजनीतिक नेताओं की नौकरों पर दबाव डालने की समस्या -

राजनीतिक नेता लोग सरकारी अफसरों या अपने नौकरों पर हमेशा रोब दिखाते हैं, उन्हें अपने अधिकार में रखना चाहते हैं । उनका उपयोग सिर्फ अपनी व्यवस्था के लिए ही करना चाहते हैं । इन नौकरों की सहायता से वे अपनी व्यवस्था को परिपूर्ण बनाते हैं । इससे देश की दुर्गति बढती जा रही है ।

'बिस्रामपुर का संत' उपन्यास में कुँवर साहब राज्यपाल हैं, वे किसी भी बात पर या काम पर कष्ठ उठाना नहीं चाहते हैं । वे अपने नीचेवाले लोगों पर रोब दिखाते हैं । मुख्यमंत्री मिलने के लिए आनेपर वे सचिव पर चिल्लाते हुए कहते हैं, "आप अपनी अकल से उन्हें निबटा नहीं सकते थे ? आपको मेरी तंदुरूस्ती का कुछ पता है ? आप पहले ही से आज के मेरे सभी इंगेजमेंट कैंसिल नहीं कर सकते थे ?"[7] इस तरह कुँवर साहब सचिव को फटकारते हैं और मुख्यमंत्री भी नाराज होकर बिना राज्यपाल को मिलते ही चले जाते हैं । इससे स्पष्ट होता है कि राजनीतिक नेता लोग नौकरों पर भी अपना ही अधिकार रखते हैं और उन्हें अपने ही मत के अनुसार चलने के लिए बाद्य करते हैं ।

इस तथ्य को लेखक ने कुँवर साहब और धीरजसिंह, मुख्यमंत्री तथा डाँ साहा के द्वारा स्पष्ट किया है ।

## 6.5 निम्न जाति के लोगों के शोषण की समस्या -

दलितों के ऊपर सदियों से अन्याय अत्याचार होते अहा रहे हैं । आज भी यह समाज अन्याय शोषण, दुख, पीड़ा और वेदना की चक्की में पीस रहा है क्योंकि इस देश में जातिवादी भावना की जडें मजबूत हैं । सवर्ण लोग उन्हें अपने समान न मानकर जाती भेद को किसी न किसी रूप में बनाए रखना चाहते हैं । अत: दलितों की अवस्था का वर्णन लेखक ने इस प्रकार किया है – "दलितों की भयानक विपन्नता के दृश्यों ने आचार्य को हिला दिया ।"[8] प्रस्तुत विधान से स्पष्ट होता हैं कि दलितों की अवस्था कितनी दयनीय बनी है । उनका हमेशा सबलों द्वारा शोषण होता है । उनकी औरतों का भी समाज के सबलों द्वारा शोषण होता है ।

## 6.6 नारी शोषण की समस्या -

प्राचीन काल से नारी अनेक बंधनों में जकड़ी हुअी है । हमारी पुरूष प्रधान संस्कृति ने उस पर अनेक बंधन थोपें हैं । एक ओर से उसे पूज्य माना गया, वहीं दूसरी ओर पुरुष

ही उसका शोषण कर रहा है । स्त्री के लिए पति परमेश्वर रहा है परंतु आज इन सभी बातों में परिवर्तन आ गए हैं । शिक्षा तथा आर्थिक निर्भरता के कारण नारी अपने अधिकारों के प्रति सचेत हो गयी है । नारी को अपने परिवार तथा समाज के प्रति कई भूमिकाएँ निभानी हैं । जिस पर पूरे समाज का भविष्य निर्भर है । उसी को आज अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है ।

अत: इसी समस्या को लेखक ने कुँवर साहब और जयश्री तथा सुंदरी के द्‌वारा उजागर किया है । 'बिस्रामपुर का संत' उपन्यास में कुँवर जयंतोप्रसाद सिंह नारी को कभी भी श्रद्‌धाभाव से देखते नहीं अपितु नारी को केवल एक भोगवस्तु की दृष्टिकोण से ही देखते हैं । कुँवर साहब अपने साधारण स्वार्थ से प्रेरित होकर नारी-भोग करना चाहते हैं । कुँवर साहब सुंदरी को भोगना चाहते हैं, उसका प्यार प्राप्त करना चाहते हैं और इसी आवेग में वे एक दिन सुंदरी को अपनी बाँहों में जकड़ लेते है, "उनकी बाँहों का घेरा काफी मजबूत था । एक क्षण के लिए वह उनकी जकड़ में सारी जीवंतता खोकर एक वस्तु की तरह बँधी रही, पर जब उन्होंने उसके ओठों पर अपने ओंठ रखने चाहे, वह चौंकी और उनकी जकड़ से बाहर निकल आई। वह हाँफ-सी रही थी, दीवार के सहारे पीठ टिकाकर खड़ी हो गई थी ।"[9]

कुँवर साहब सुंदरी के ओर आकर्षित होकर उसका प्यार पाना चाहते हैं यहाँ तक की उसे अपनी बाहों में जकड़ने का भी प्रयास करते हैं । अत: सुंदरी से शरीर सुख चाहते है और वैसी हरकत करने से भी डरते नहीं । प्रतिक्रिया स्वरूप सुंदरी, "अचानक हँसने लगी थी वेसे ही अचानक चुप हो गई । वे उसे कुंठित निगाह से देख रहें थे । सुंदरी ने कहा, "क्या कहूँ ? आपको धन्यवाद दूँ ? पर यह नामुमकिन है ।"[10] सुंदरी अपने मन की बात किसी को बता नहीं सकती अत: अपनी सहेली सुशीला को भी कहने से वह डरती है ।

राजनीतिक नेता द्वारा नारी शोषण की स्थिति पर शुक्ल जी ने गहराई से चिंतन किया है । शुक्ल जी ने भारतीय समाज व्यवस्था और संस्कृति के प्रभाव के कारण नारी जीवन के सामने खड़ी समस्याएँ, नारी की स्थिति उसकी मानसिकता आदि का चित्रण किया है ।

## 6.7 अकेलेपन की समस्या -

"अकेलेपन की समस्या आधुनिक युग की अत्यधिक गंभीर समस्या है । परिस्थितियों के दबाव में आकर व्यक्ति में घुटन सी पैदा होती है । मानव जीवन की सबसे बड़ी त्रासदी यह है कि व्यक्ति जीवन में अकेला हो जाता है । आज महानगरों में यह समस्या गंभीर रूप धारण कर रही है । अकेलेपन के बारे में डॉ. प्रेमकुमार कहते हैं, "नगर – महानगर, बोध परिचय, अकेलेपन, खुदगर्जी, अनात्मियता के रेशों से बुना जाता है । निकट संबंधों में तनाव और टूटन की स्थितियाँ यहाँ के व्यस्त जीवन में प्राय: बनती है । भाग – दौड़, उखाड़, पछाड़ और लॉज-डॉट में उलझा-झुझलाया नागरिक अनेक मुखौटें पहनने के लिए विवश होता है ।"[11] अत: समाज में रहते हुए तथा अपने सगे संबंधियों के होते हुए भी मानसिक तनाव के कारण मनुष्य कभी कभी अकेलापन महसूस करता है । अत: यह घुटन और अकेलेपन की समस्या शुक्ल जी के 'बिस्रामपुर का संत' इस उपन्यास में दिखाई देती है ।

कुँवर साहब की पत्नी मर चुकी है, बेटा विवेक भी शहर में रहता है अत: कुँवर साहब अकेले ही रहते हैं । परंतु सुंदरी का पत्र पढ़कर वे बेजान बन जाते है – "शरीर में बड़ी थकान है, बाहर निकलने का मन नहीं हुआ ।"[12] इससे कुँवर साहब अकेलेपन या कुंठा की समस्या से ग्रस्त होने का परिचय मिलता है ।

'बिस्रामपुर का संत' उपन्यास में कुँवर साहब की तरह सुंदरी भी अकेलेपन से त्रस्त है, ''विवेक के चले जाने के बाद भी वह तने पर बैठी रही, पानी से भरी बालटियों का ऊपर आना और रीती होकर नीचे जाना देखती रही ।''[13]

सुशीला भी अकेलेपन से ग्रस्त नारी है । पति के साथ उसकी बनती नहीं है अत: वह पति से अगल रहना पसंद करती है ।

इस तरह शुक्ल जी ने कुँवर साहब, सुंदरी तथा सुशीला के माध्यम से अकेलेपन की समस्या को पाठकों के सामने प्रस्तुत किया है ।

## 6.8 असफल प्रेम की समस्या -

प्रेम एक व्यापक परिकल्पना है । एक-दूसरे के प्रति प्रेम का आकर्षण जात-पात, समाज का विरोध सभी को लांघकर विवाह के पवित्र बंधन में बांध देता है । विवाह पूर्व प्रेम में जिम्मेदारी का भाव कम और उन्मुक्तता अधिक दिखायी देती है । उन्मुक्त प्रेम करनेवाले प्रेमी केवल सौंदर्य और यौवन से प्रेम करते हैं, अत: उनमें हार्दिक प्रेम नहीं होता । ऐसा प्रेम पारिवारिक स्वास्थ्य के लिए विघातक होता है ।

'बिस्रामपुर का संत' उपन्यास में लेखक ने इस समस्या को चित्रित किया है । सुंदरी अपना परिवार छोड़कर बिस्रामपुर में आकर समाजसेवा करना पसंद करती है, अत: वह शादी का ख्याल भी मन में नहीं लाती परंतु विवेक के साथ रहने से, उसका व्यक्तित्व, स्वभाव सबकुछ देखकर वह विवेक को चाहने लगती है और शादी भी करना पसंद करती है लेकिन विवेक को स्पष्ट कहने से वह डरती है – ''मैं कुछ भी सोच नहीं पा रही हूँ । यह सब कितना अचानक है । विवेक, यह बात हम यहीं छोड़ दे ।''[14] प्रतिक्रिया स्वरूप विवेक कहता है, ''इसे आकस्मिक बनाने के लिए मैं माफी चाहता हूँ । पर चाहते हुए भी मैं अपनी बात किसी

और तरह से नहीं रख सकता था । जो भी हो, यह मेरे लिए सब कुछ आसान हो गया है । मैं अब पारंपारिक शब्दों में भी वही निवेदन कर सकता हूँ ।''[15] इससे स्पष्ट होता है कि दोनों एक-दुसरें को चाहकर भी एक दूसरें से अलग है ।

कुँवर साहब भी जयश्री से प्रेम करने लगते हैं – अत: उनके प्रेम का दौर कुछ दिन चलता रहा और जयश्री विदेश चली जाती है । उसी तरह कुँवर साहब और सुंदरी का भी यहों हाल हुआ । कुँवर साहब अपनी उम्र का भी खयाल न करके सुंदरी से प्रेम की अपेक्षा करते हैं लेकिन असफल होते हैं ।

इस प्रकार 'बिस्रामपुर का संत' उपन्यास में लेखक शुक्ल जी ने असफल प्रेम की समस्या को चित्रित किया है ।

## 6.9 मूल्य टूटन की समस्या -

मानव जीवन और मूल्यों में हमेशा परिवर्तन होता आ रहा है । मनुष्य के पारस्पारिक संबंधों, उनके क्रिया-व्यापारों, उनके सोचने-विचारने के तौर-तरीकों, उनकी मान्यताओं एवं विश्वासों तथा उनकी रीतियों-नीतियों आदि का प्रत्यक्ष संबंध जीवन की एक विशिष्ट प्रणाली से हो सकता है । इससे उनके व्यवहार नियंत्रित एवं नियमित होते हैं । यह जीवन प्रणाली कुछ विशिष्ट सिद्धातों पर आधारित होती है, जिन्हें जीवन मूल्य कहा जाता है ।

यंत्रयुग, बढती महंगाई और आबादी आदि के कारण जीवन में बदलाव आने लगे हैं । आत्मीय संबंधों में दरारें निर्माण होने लगी हैं । आत्मकेंद्रितता के कारण संयुक्त परिवार टूटने लगे हैं, उदरपूर्ति के कारण नागरी आकर्षण बढ़ रहा है, संयुक्त परिवार के टूटने के कारण आत्मीय भाव टूटते गए हैं, अत: बेईमानी और झूठ के प्रवेश के कारण नैतिकता टूट गई है ।

'बिस्रामपुर का संत' उपन्यास में लेखक ने इस समस्या को चित्रित किया है । जयश्री के पति विदेश में रहने के कारण जयश्री और उसके पति के आत्मीय संबंधों में दरारें निर्माण होती हैं, निर्मल भाई अपनी पत्नी सुशीला से हमेशा झूठ बोलते हैं अत: दोनों में आत्मीयता की भावना लोप होती है तथा कुँवर साहब आत्मकेंद्रित होने के कारण वह बेटे से कभी खुलकर बात नहीं करते अत: यहीं कारण हैं जो मूल्य टूटन की समस्याओं को पैदा करते हैं ।

अत: लेखक ने पारिवारिक एकता में खंडितता, आत्मकेंद्रितता, राजनीतिक तिकड़मी, आत्मीय संबंधों में बडी अनादर की भावना आदि के कारण जन जीवन से उभरी मूल्य टूटन की समस्या को चित्रित किया है ।

## 6.10 नशापान की समस्या -

'बिस्रामपुर का संत' यह ग्रामीण-सामाजिक उपन्यास है । अत: ग्रामजीवन में आधुनिकता के साथ शराब की दुकानों का प्रवेश हुआ है, जिससे मानव पर विशेष असर होता जा रहा है । अत: यह स्थिति चिंताजनक हो रही है । शुक्ल जी ने ऐसे प्रसंगों का चित्रण करते हुए चिंता व्यक्त की है ।

प्रस्तुत उपन्यास में जयश्री एक गृहस्थी नारी है लेकिन वह इतने आगे जा चुकी है कि वह शराब पीना भी गैर नहीं मानती । ''यह भी सुनने में आया कि पति से उसके संबंध सहज नहीं है, वह पियक्कड़ हो चुकी है ।''[16] इससे स्पष्ट होता है कि पुरूषों के साथ औरतें भी शराब के कारण बरबाद होती जा रही हैं यह चिंता का विषय है । इस पर लेखक ने चिंतन करते हुए पाश्चात्य संस्कृति के आक्रमण से हुअी भारतीय नारी संस्कृति की हानी को स्पष्ट किया है ।

दुबे महाराज तो हमेशा नशा में धूत रहता है, दिन हो या रात वह निरंतर शराब पीता है, "आज शाम हांडी से शराब पीता हुआ वह नदी की ओर बढ़ आया था ।"[17] इससे स्पष्ट होता है कि वह नशापान के आधीन ही हो गया है ।

आज ग्रामीण-जीवन में प्रविष्ट नशापान के विविध आयामों को देखकर लगता है कि नशापान के मामले में गाँवों का शहरीकरण हो रहा है । शहरों में महानगरों में जो नशापान के आयाम दिखाई देते हैं, इन्होंने ग्रामीण जीवन में अपने घर फैलाना शुरू कर दिया है और यही तथ्य शुक्ल जी ने प्रस्तुत उपन्यास के माध्यम से पाठकों के सामने प्रस्तुत किया है ।

## 6.11 गुंडई की समस्या -

आज गुंडई की समस्या पूरी दूनिया में गतिशील हो रही है । गुंडई या आतंक से हिंसा और भय पैदा करने का प्रयत्न सर्वत्र रहता है । अपने उद्‌देश्य प्राप्ति के लिए संघर्ष का अवलंब करना, प्रस्थापित समाज व्यवस्था में भय निर्माण करना, मानवीय मूल्यों का उल्लंघन करना आदि का समावेश गुंडई में किया जाता है ।

'बिस्त्रामपुर का संत' उपन्यास में लेखक ने गुंडई की समस्या को दुबे महाराज के माध्यम से स्पष्ट किया है । दुबे महाराज बिस्त्रामपुर का एक जमींदार है उसकी वहाँ खुब चलती है, अत: उसके विरोध में कोई कदम नहीं उठाते । दुबे महाराज हमेशा अपने पास पालतु कुत्तों की तरह गुंडों को रखता है और उनके आधार पर गाँव के लोगों को, किसानों को डराता है अत: वह दिन-रात शराब पीकर आतंक मचाता है, "दिन-रात पिये रहता है, उससे कोई तुक की बात की ही नहीं जा सकती । बदमाशों की सोहबत रखता है । हम लोग जान बूझकर उसके रास्ते में नहीं आते । यही क्या कम है कि वह भी हमारे रास्ते में नहीं आता ।"[18] इसके साथ ही "दुबे महाराज शराब पीकर पागलों की तरह बकझक कर रहा है, कह रहा है कि शिकायत करनेवालों

को गोली मार दूँगा ।"[19] इससे स्पष्ट होता है कि दुबे महाराज गाँव में गुंडागर्दी करके लोगों को डराता है । अपना उल्लू सीधा करने के लिए वे गुंडई का आश्रय लेता हैं । ये घटनाएँ ग्रामजीवन में गुंडई की उभरती गतिविधियों पर प्रकाश डालती हैं । आज गुंडई के बाह्य आतंक और आंतरिक आतंक के कारण ग्रामीण जीवन पीडित हो रहा है, इस पर शुक्ल जी ने यथार्थ रूप में प्रकाश डाला है ।

## 6.12 जमींदारी शोषण की समस्या -

अंग्रेजों के आगमन के साथ जमींदारी प्रथा को बढ़ावा मिला, जिसके परिणाम स्वरूप किसानों का सर्वाधिक शोषण होता रहा । जमींदार अपने इलाके के सर्वेसर्वा होने के कारण किसानों पर जोर-जुल्म करना, उनसे बेगार लेना, उन्हें मारपीट करना आदि घृणित कार्य करते रहे । आचारहीन तथा निरंकुश जमींदारों के उत्पीड़न के शिकार बने किसानों को जीना दुभर हो जाता है । इस जमींदारी शोषण की स्थिति का चित्रण लेखक शुक्ल जी के आलोच्य उपन्यास में चित्रित किया है ।

प्रस्तुत उपन्यास में दुबे महाराज एक जमींदार हैं । वे अपनी पुस्त-हर-पुस्त की जमीन पर को-ऑपरेटिव्ह फॉर्म बनाकर दुबे का चचेरा भाई उसका अध्यक्ष बन जाता है, जो पागल से भी बदतर है । उनके हाथ में फार्म का कारोबार रहा और फार्म बराबर घाटे पर चलने लगा तथा कर्ज चुकाने के लिए भी फंड में पैसा नहीं बचा । परंतु कर्ज चुकाना तो आवश्यक था इसलिए, कर्ज की अदायगी के लिए दुबे महाराज ने सदस्य किसानों के शोषण का नया तरीका निकाला । दुबे महाराज किसानों की मजदूरी से रूपए काटने लगा और वही रूपए फंड में डालने लगा लेकिन उसके आगे प्रतिक्रिया या विरोध करने की हिम्मत किसी की नहीं रही । अगर

किसी ने विरोध करने की हिम्मत की तो दुबे महाराज उनकी पीटाई करते इस डर से उसका मुकाबला करने से किसान, मजदूर घबराते हैं ।

उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट होता है कि जमींदारी व्यवस्था रहते हुए और टूटने के बाद भी जमींदारों के द्वारा सामान्यजनों पर अत्याचार करना, उनका शोषण करना, आदि अत्याचारी कारनामें किए जाते हैं, जिससे इस समस्या की भयावहता और अमानवीय वृत्ति स्पष्ट होती है । इस समस्या को दुबे के माध्यम से स्पष्ट किया है ।

भारत में सामाजिक स्वास्थ्य के लिए अन्याय और अत्याचार रोकने के लिए कानून व्यवस्था बनाई है । सामान्यजनों के मन में न्याय व्यवस्था के प्रति विश्वास है । इसलिए आमतौर पर सामान्य जन अपने पर होनेवाले अन्याय और अत्याचार के विरूद्ध कानून से न्याय की आशा रखते हैं परंतु आज न्यायव्यवस्था की विश्वसनीयता पर भी प्रश्न चिन्ह लगाया जा रहा है । यह न्याय व्यवस्था किसानों, मजदूरों को न्याय देने का काम नहीं करती जिससे उनका शोषण होता है ।

इसी तथ्य को लेखक शुक्ल जी ने प्रस्तुत उपन्यास के द्वारा स्पष्ट करने का प्रयास किया है । जमींदार राजा कहलाये जाते थे, उनकी शान–शौकत किसानों के, मजदूरों के कष्टों पर रहा करती, ये जमींदार लोग किसानों पर अपना अधिकार जताते और उनका खून चुस लेते, लेकिन हमारी कानून व्यवस्था कुछ नहीं कर पाती । इसका स्पष्ट सबुत निम्ननुसार देखा जा सकता है – ''जमींदारों की आमदनी का मुख्य स्त्रोत किसानों की जोत पर लगनेवाला कर लगान था । उसका एक हिस्सा वे मालगुजारी के नाम पर सरकार को देते थे । उनकी हैसियत बिचौलिये या दलाल की थी पर जमीन के ऊपर मिल्कियत होने के कारण वे किसानों पर

स्वामित्व का सा हक रखते थे जिसे लाचार कानूनों ने व्यवहार में ऐसी मजबूती दे दी थी जिसका जिक्र किसी भी कानून में नहीं था ।''[20]

इससे स्पष्ट होता है कि जमींदार कानूनी व्यवस्था को अपने वश में बनाए रखते हैं और किसानों का शोषण करते हैं ।

## 6.13 भूमि वितरण की समस्या -

श्रीलाल शुक्ल द्वारा लिखित 'बिस्रामपुर का संत' आचार्य विनोबा भावे के नेतृत्व में चलाए गए भूदान आंदोलन के आधार पर लिखा उपन्यास है । अत: इसमें भूदान एवं ग्रामदान का प्रसंग आया है ।

साम्यवादियों के नेतृत्व में तेलंगाना में भूमिपतियों के खिलाफ किसानों का व्यापक आंदोलन चल रहा था । तेलंगाना की स्थिति की सीधी जानकारी लेने के लिए आचार्य जी तेलंगाना की यात्रा पर निकले ।

पोचमपल्ली के किसानों की खासकर दलितों के भयानक दृष्यों ने आचार्य जी को दु:खी बना दिया और उनके विकास की बातों पर सोचने के लिए मजबूर कर दिया । आचार्य जी ने उनकी मदत के लिए गाँव में उपलब्ध साधनों के बारे में चर्चा की और जानना चाहा कि कोई भूस्वामी भूमिहीनों को जमीन दान में दे सकता है । रामचंद्र रेड्डी नामक एक भूस्वामी ने 100 एकड जमीन दान में देने का वचन दिया जिसकी खुद विनोबा जी को भी आशा नहीं थी ।

भूदान यज्ञ में अनेक बड़े-बड़े जमींदारोंने जमीन दान में दे दी जिस पर विवेक और उसके ताऊ गहराई से विचार करते हैं, जो भूमि-वितरण की समस्या को उजागर करते हैं । ''खुली हवा और पानी की तरह सारी भूमि गोपाल की है । माना इससे कोई झगड़ा नहीं । पर आदिम युग से भूनि की व्यवस्था को लेकर जो कुछ उलटा-पुलटा , सही-गलत किया गया है

SHIVAJI UNIVERSITY LIBRARY KOLHAPUR

और आज भी कानूनी ताकतों के सहारे जमीन के स्वामित्व की जो हैसियत है, उसे क्या एक आदर्श वाक्य के उच्चारण भर से आप खत्म कर देंगे ?''[21] इससे स्पष्ट होता है कि जमींदारों का स्वामित्व खत्म् नहीं होगा, तथा सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह है कि ऐसे लोगों की हमारी कानूनी व्यवस्था या कानून की ताकत भी इन्हीं के पल्लू में रहती है । विनोबा चाहते हैं कि भूमि का वितरण समान मात्रा में हो । कोई भूमिहीन न रहे, कोई जमींदार न रहे परंतु जमींदारी टूटन के कानून पर भी जमींदारों के वंशजों की ऐंठन बाकी रह चुकी है, जिससे भूमि वितरण की समस्या के दर्शन होते हैं । अत: भूमि वितरण के संबंध में विवेक गहराई से सोचते हुए कहता है ''इस आंदोलन पर ज्यादा दिमाग खर्च करने की जरूरत नहीं । आप तुरंत देख सकते हैं, पंद्रह बीस साल में यह आंदोलन कुछ व्यक्तिगत 'सक्सेस स्टोरीज' का सफल उपलब्धियों का संकलन मात्र होकर रह जाएगा । भावकुकतापूर्ण आदर्श कल्पनाओं से इतिहास में कुछ पन्ने भर जुड़ते हैं, इतिहास बदलता नहीं है । इतिहास बदलता है सिर्फ सुस्पष्ट, सुचिंतित वैज्ञानिक विचारधारा से ....।'' [22]

अत: उपर्युक्त विवरण भूमि वितरण समस्या को उजागर करते हैं ।

## 6.14 अवैध यौन संबंधों की समस्या -

''यौन सुलभ स्त्री-पुरूष का एक दूसरे के प्रति आकर्षण समाज द्वारा प्रेमाकर्षण का विरोध करने पर चोरी छिपे स्थापित किये गये संबंध, धनिकों द्वारा दुर्बल नारी को भोगने की प्रवृत्ति, कामवासना की पूर्ति के लिए रखैल रखने की वृत्ति, दमित एवं कुंठित यौन के कारण निर्माण विकृति आदि के कारण यौन संबंधों की समस्या उभरती है । आम तौर पर यौन संबंधों के पीछे विकृत मानसिकता ही दिखाई देती है । इस संदर्भ में डॉ. वाय. बी. धुमाळ जी ने कहा

है, ''युवक और युवतियों में प्रौढ़ और प्रौढ़ाओं में यौन सुख के प्रति अतृप्ति, तीव्रता और मुक्तता के कारण विकृत यौन चेतना की निर्मिति होती है ।''[23]

'बिस्रामपुर का संत' उपन्यास में कुँवर जयंतीप्रसाद सिंह और जयश्री इन दोनो में अवैध संबंध दिखाई देते हैं और लेखक ने इसका स्पष्टीकरण उपन्यास में चित्रित किया है ''यौन आकर्षण का वास्तव में यह पहला और सबसे शक्तिशाली विस्फोट था । कई महिने वे इसी विस्मय के साथ जीते रहे थे कि जिंदगी आदमी को इतना आनंद, इतना उल्लास भी दे सकती है, कि किसी के ओठ भर छूकर कोई अपने को संसार का सबसे वैभवशाली व्यक्ति मान ले ।''[24]

यौन आकर्षण पर सामाजिक दबाव होने से चोरी-छिपे प्रेम से उत्पन्न प्रसंग का चित्रण लेखक शुक्ल जी ने किया है । कुँवर साहब और जयश्री दोनों में इतना प्रेम बढ़ गया कि जयश्री कुँवर साहब से शरीर सुख चाहने लगी है और कुँवर साहब को अपने कमरे में भी बुलाने लगी है । लेकिन एकबार जयश्री स्वयं कुँवर साहब के कमरे में आ गयी, ''कुंठा कुछ इसलिए भी गहरी हो रही थी कि जयश्री से बात करने की छटपटाहट के बावजूद उन्हें खामोश रहना था और वे सिर्फ निशब्द चुंबनों की भाषा पर ही आश्रित थे ।''[25]

अत: अवैध यौन संबंधों के परिणाम स्वरूप परिवार की शांती नष्ट होती है, इसे शुक्ल जी ने 'बिस्रामपुर का संत' के माध्यम से स्पष्ट किया है । यौन आकर्षण अतृप्त, विकृत यौन कुंठा आदि के कारण यौन संबंध स्थापित किए जाते हैं । शुक्ल जी ने यौन संबंधों का चित्रण करते समय संबंधों में स्वच्छंदीपन को, रोमँटिकता को, प्रस्तुत न करके अत्यंत संयत रूप से इन संबंधों को उभारा है । अत: अपनी लेखकीय नैतिकता की सीमा रेखा को कहीं पर भी लांघने का प्रयत्न नहीं किया है । लेखक की नैतिक संस्कारशीलता के दर्शन भी यहाँ होते हैं।

आज व्यक्ति भौतिक समृद्धि के आकर्षण के कारण सेक्स पीड़ित बन गया है । वह सेक्स तृप्ति को अपने जीवन में प्रमुखता दे रहा है ।

श्रीलाल शुक्ल के उपन्यास 'बिस्रामपुर का संत' में सेक्स समस्या पर चिंतन करते हुए लेखक ने राजनीतिक नेताओं की पोल खोलने का काम किया है ।

विवेच्य उपन्यास के कुँवर साहब जयश्री के घर में रहते हैं । जयश्री का एक शादीशुदा औरत होने पर भी कुँवर साहब की ओर आकर्षित होना, कुछ दिनों बाद कुँवर साहब का भी जयश्री की ओर आकर्षित होना, कुँवर साहब और जयश्री के जो संबंध भौतिक और सेक्स के अतिरिक्त आकर्षण के रूप में होना, कुँवर साहब का एक छात्र के रूप में होने पर भी शादीशुदा नारी जयश्री का उसकी ओर आकर्षित होकर उससे शरीर संबंध स्थापित करना, जयश्री द्वारा कुँवर साहब से कामपूर्ति की आशा करना, उन्हें रात के एकांत में अपने कमरे में बुलाना, कुँवर साहब जयश्री के कमरे में न आने पर जयश्री का स्वयं कुँवर साहब के कमरे में जाना ये घटनाएँ दोनों के बीच की सेक्स समस्या पर प्रकाश डालती है । ''वह कुँवर साहब के पास आकर बैठी, बगल में लेट गई और उन्हें अपनी बाहों में समटने लगी । विस्मय डर और एक सर्वथा नये किस्म के आवेग से उनकी साँस रूँध गई ।''[25] इससे स्पष्ट होता है कि जयश्री का जो आकर्षण है वह शारिरीक आकर्षण है । अपने पति के होते हुए भी जयश्री कुँवर साहब की ओर आकर्षित होकर अवैध यौन संबंधों के माध्यम से वह कुँवर साहब को पाकर अपनी कामपूर्ति करती है ।

कुँवर साहब भी जयश्री के बिना मानो पागल से बन जाते हैं अत: वे भी उसकी ओर पूर्ण रूप से आकर्षित होते हैं । कुँवर साहब भी अवैध यौन संबधों के लिए इतने उतावले

बन जाते हैं कि, "जयश्री के पेट, पीठ और जाँघो को छुते हुए उन्हें उत्तेजना के साथ आश्चर्य भी हो रहा था कि किसी का स्पर्श इतना चिकना और मुलायम भी हो सकता है ।"[26]

'बिस्रामपुर का संत' उपन्यास के केंद्रिय पात्र कुँवर साहब अवैध यौन संबंधों से पीडित हैं । उनकी काम वासना जीवन के अंतिम दिनों तक तृप्त नहीं होती । जयश्री का प्यार पाकर भी उनकी वासना तृप्त नहीं होती । सुंदरी की मुलाकात होने के बाद वे सुंदरी में जयश्री को ढूँढने की चेष्टा करते हैं और सुंदरी को भी पाना चाहते हैं । उनकी लैंगिक वासना इतनी तीव्र है कि, "बाँह पर सुंदरी के उभरे हुए, पुष्ट स्तनों की उष्मा का वे लगातर बहुत दिन तक अनुभव करते रहे थे । एक अचकचाये हुए क्षण का वह आकस्मिक स्पर्श ।"[27] इससे स्पष्ट होता है कि कुँवर साहब काम वासना से पीड़ित रहते हैं और कामपूर्ति करने के लिए वे सुंदरी का साथ पाना चाहते हैं ।

इस तरह 'बिस्रामपुर का संत' उपन्यास के माध्यम से लेखक शुक्ल जी ने अवैध यौन संबंधों की समस्या पर गहराई से चिंतन किया है ।

## 6.15 आर्थिक समस्या -

समाज में अर्थ का महत्त्वपूर्ण स्थान है । परिवार में जो संघर्ष होते हैं, वे अधिकतर आर्थिक विषमता के कारण ही होते हैं । किसी भी अर्थव्यवस्था का परिदृश्य मुख्यत: आर्थिक कारणों से ही संचालित होता है । अर्थ और अर्थव्यवस्था पर ही समाज के व्यवहार, संबंध, रिश्ते आदि सभी कुछ निर्धारित होते हैं । आर्थिक दृष्टि से असमानता के कारण कोई अमीर तो कोई गरीब दिखाई देता है ।

प्रस्तुत उपन्यास में लेखक ने रामलोटन के द्वारा आर्थिक समस्या को उजागर किया है ।

रामलोटन शरीर से तगड़ा है । लेकिन उसकी जमीन दुबे महाराज द्वारा हडप लेने के कारण उसे रिक्षा चलाना पड़ता है – "यह मजबूत काठी वाला प्रौढ किसान, जिसकी अधपकी मूँछे ऊपर की ओर तनी हुई है, जो कंचे पर काठी रखे हुए पीछे पीछे आ रहा है ।"[28] इससे स्पष्ट होता है कि खुद की जमीन न होने के कारण उसे रिक्षा चलाकर रूपए कमाना आवश्यक होता है । रामलोटन के चार बच्चे हैं उनकी देखभाल उसेही करनी पड़ती है अत: रूपयों की आवश्यकता होने के कारण वह बनारस में रिक्षा चलाने के लिए जाता है ।

अत: जीवन में सबसे महत्त्वपूर्ण स्थान 'अर्थ' का है । प्रत्येक युग का सामाजिक, राजनीतिक एवं सांस्कृतिक जीवन आर्थिक मूल्यों से प्रभावित रहा है ।

## 6.16 असफल दांपत्य जीवन की समस्या -

परिवार के संदर्भ में अनेक विद्वानों की अपनी अपनी धारणाएँ हैं । उन्होंने उसकी आवश्यकता तथा उद्भव के संदर्भ में अपनी मान्यता प्रदान की है । मानव के लिए कामपूर्ति आवश्यक है, अत: पालन पोषण और सुरक्षा तथा काम संबंध को लेकर ही तो परिवार की निर्मिति हुयी दिखाई देती है । परिवार जैसी प्राथमिक एवं सर्वव्यापी सामाजिक संस्था का उद्भव निश्चय ही मनुष्य की सहज जैविक आवश्यकताओं और आधारभूत सामाजिक वृत्तियों से हुआ है ।

संसार में जब किसी के दांपत्य जीवन में तीसरे व्यक्ति का आगमन होता है तब वह दांपत्य जीवन नया मोड लेता है । पति पत्नी के बीच जब तीसरा आदमी आता है तब वह दांपत्य जीवन मानो टूट ही जाता है ।

'बिस्रामपुर का संत' उपन्यास में जयश्री के पति नौकरी के कारण विदेश में रहते हैं और जयश्री सास ससुर के साथ गाँव में रहती है । जयश्री स्वतंत्र प्रवृत्ति की नारी है तभी तो वह कुँवर

साहब की ओर आकर्षित होती है उनके साथ प्रेम करती है और शरीर सुख की भी अपेक्षा करती है और एक दिन स्वयं उनके कमरे में जाकर कुँवर साहब के बगल में सोती है । कुछ दिनों बाद जयश्री अपने पति के साथ विदेश चली जाती है लेकिन वहाँ जाकर वह पति के साथ खुशी से नहीं रह सकती है, जयश्री शराब पीने लगती है और उसकी यह हरकत उसके पति को पसंत नहीं, अत: दोनों में तनाव निर्माण हो जाता है । आखिर जयश्री की मौत हो जाती है, "पर उसकी मौत के बाद उँगली उसी पर नहीं, उसके पति पर भी उठी । अफवाह थी और अंदरूनी भेदियों का दावा था कि यह दुर्घटना उसके पति के षड़यंत्र की उपज थी क्योंकि वह जयश्री की शराबखोरी और निम्फोमैनिया (नौजवान परस्त्री) से अजिज आ गया था ।"[29] इससे स्पष्ट होता है कि जयश्री के कारण उनका दांपत्य जीवन दु:खी बनता है । अत: जयश्री के पति अंत तक अकेले ही रहते हैं मानो अकेले पण की समस्या में जकड़ जाते है ।

'बिस्रामपुर का संत' में सुशीला और निर्मल का दांपत्य जीवन भी सुखी नहीं है । निर्मल भाई भूदान आंदोलन में एक सक्रिय कार्यकर्ता थे लेकिन बाद में वे भ्रष्टाचारी बन जाते हैं । उन्हें अपने देश की पोषाख भी भींख मंगो की पोषाख लगती है । अत: वे इतना भ्रष्टाचार करते हैं कि एक दिन सोने की तस्करी के सिलसिले में जेल में बंद हो जाते हैं । सुशीला एक सच्ची समाजसेविका है इसलिए उसे यह निर्मल का व्यवहार बिलकुल पसंद नहीं आता वह उसकी नफरत करने लगती है । सुशीला एक स्वतंत्र प्रवृत्ति की, स्वतंत्र विचारों की नारी है और वह अपने खुद के बनाए मार्ग पर चलना पसंद करती है, "वहाँ निर्मल की एक शानदार कोठी है, और भी बहुत कुछ । पर उससे मेरा कुछ लेना देना नहीं है ।"[30] पति-पत्नी की स्वाभाविक सी झोक तब इतनी कड़वी होती है कि जब दोनों एक-दूसरे को दुश्मन समझने लगते हैं । निर्मल

का बदला हुआ रूप सुशीला को खीज और गुस्से से भरने लगता है । अत: सुशीला निर्मल की इतनी नफरत करती है कि उसका मूँह तक देखना नहीं चाहती ।

अत: आधुनिक काल में परिवार एवं दांपत्य संबंध में अधिकाधिक टकराव निर्माण हो रहा है । परिवार में रहनेवाले हर-एक सदस्य के प्रति दूसरे सदस्य के मन मे अनास्था निर्माण होती दिखाई देती है और इसी तथ्य को लेखक ने 'बिस्रामपुर का संत' उपन्यास के माध्यम से स्पष्ट किया है ।

## समन्वित निष्कर्ष -

उपन्यासकार 'श्रीलाल शुक्ल' आधुनिक हिंदी साहित्य के एक प्रखर और प्रगतिवादी लेखक माने जाते हैं । शुक्ल जी ने समाज के निम्नवर्ग तथा किसानों के अनवरत शोषण तथा उससे जन्मे आक्रोश का अंकन अपनी प्रस्तुत रचना 'बिस्रामपुर का संत' में किया है ।

किसी भी लेखक की नैतिक मान्यताएँ भावनाएँ, दृष्टिकोण आदि समाज की मनोवृत्ति और विचारधाराओं से होती है । शुक्ल जी भी अपने युग की मनोवृत्ति और विचारधाराओं से अछुते नहीं रहें ।

प्रस्तुत अध्याय में लेखक शुक्ल जी ने जातिभेद की समस्या, भ्रष्टाचार की समस्या, राजनीतिक नेताओं के कुटनीति की समस्या, निम्न जाति के शोषण की समस्या, नारी शोषण की समस्या, अकेलेपन की समस्या, असफल प्रेम की समस्या, नशापान की समस्या, गुंडई की समस्या, भूमिवितरण की समस्या, अवैध यौन संबंधों की समस्या, असफल दांपत्य जीवन की समस्या आदि समस्याओं को चित्रित किया है ।

कोई भी सामाजिक समस्या आर्थिक विषमता, वर्गभेद तथा नैतिक मूल्यों के संभ्रम से उत्पन्न होती है और मनुष्य के विकास में बाधा पहुँचाती है । औद्योगिक विकास और स्वातंत्र्योत्तर मोहभंग की स्थिति से उत्पन्न समस्या से भारतीय समाज-जीवन पीड़ित हो गया है । इन समस्याओं को लेखक शुक्ल जी ने 'बिस्रामपुर का संत' उपन्यास में सफलता के साथ प्रस्तुत किया है । जमींदारी शोषण और अत्याचार की समस्या में जमींदारों के द्वारा होनेवाले शोषण पर प्रकाश डाला है । मजदूरी काटना, मारपीट करना, हडपनीति को जताना, पुलिस से साँठ-गाँठ करके सामान्यजनों पर अन्याय करना आदि का चित्रण समस्याओं के रूप में यहाँ हुआ है । निर्मल भाई द्वारा या दुबे महाराज द्वारा किया हुआ भ्रष्टाचार पर भी यहाँ गहराई से सोचा है ।

मूल्य टूटन की समस्या में नागरी प्रभाव को जिम्मेदार ठहराया है और अर्थ केंद्रित एवं आत्मकेंद्रित प्रवृत्ति के कारण परिवार का टूटन, नगर का आकर्षण, श्रद्धा सम्मान का आभाव, बेईमानी और झूठ का प्रभाव आदि को निर्मल भाई, कुँवर साहब के माध्यम से चित्रित किया है ।

नारी शोषण की समस्या में पुरूष प्रधान व्यवस्था का नारी पर बढ़ता दबाव आदि से उत्पन्न स्थितियों का चित्रण कुँवर साहब और सुंदरी के माध्यम से किया है ।

यौन संबंधों की समस्या में जोर-जबरदस्ती का प्रयत्न इसके पीछे छिपी अतृप्ति, विकृत मानसिकता आदि स्थितियों का चित्रण लेखक ने सफलता से किया है ।

नौकरशाही की समस्या में ग्रामीण विकास के लिए नियुक्त अधिकारियों की मनमानी, रिश्वतखोरी, सही समय पर काम न करना आदि का चित्रण लेखन ने इस समस्या के अंतर्गत किया है ।

नशापान की समस्या में शराब पीना और अन्याय-अत्याचार गुंडई करना, तथा अल्पकालिक समाधान पाने की प्रवृत्ति को दुबे महाराज और जयश्री के माध्यम से स्पष्ट किया है । दुबे महाराज द्वारा गुंडाई की समस्या में इच्छित बातों की पूर्ति के लिए विद्रोह करना, भय का निर्माण करना आदि समस्याओं का चित्रण लेखक ने सफलता से किया है । अत: जीवन को त्रस्त करनेवाली नशापान की, तस्करी की, आतंक की समस्या ने आज ग्रामीण जीवन में प्रवेश किया है और उसपर लेखक ने चिंता व्यक्त की है ।

शुक्ल ने इन समस्याओं के माध्यम से छोटे किसान, दलित पीडित अभावग्रस्तों की दयनीयता को भी यथार्थ रूप में उकेरा है । शुक्ल जी ने इन लोगों के प्रति सहानुभूति उनके मार्क्सवादी विचारों की द्योतक लगती है ।

अन्याय और अत्याचार से उन्हें ऊपर उठाने के लिए लेखक उनमें चेतना भरना और अन्याय अत्याचार के खिलाफ विद्रोह करने को उकसाना चाहते हैं । और इसी तथ्य को लेखक ने 'बिन्नामपुर का संत' के रामलोटन के माध्यम से सिद्ध किया है । इन समस्याओं के साथ साथ आधुनिक जीवन जीनेवाली नारी के कारण उसके परिवार तथा दांपत्य जीवन का सुख किस तरह नष्ट होता है यह जयश्री के माध्यम से स्पष्ट किया है । अत: बनते-बिगड़ते स्त्री-पुरुष संबंधों के कारण पारिवारिक तनाव भी बढ़ जाता है । जयश्री और उसके पति के माध्यम से यह स्पष्ट किया है ।

जयश्री, पति के होते हुए भी कुँवर साहब से कामपूर्ति करती है । कुँवर साहब एक बेटे के पिता होकर भी सुंदरी से कामपूर्ती करने की इच्छा प्रकट करते हैं । इससे लेखक ने अवैध यौन संबंधों की समस्या को उजागर किया है ।

अंत में शुक्ल ने इन समस्याओं के माध्यम से यह स्पष्ट कर दिया है कि समाज जीवन के विकास के परिणाम स्वरूप सामाजिक समस्याएँ निर्माण होती हैं और यहीं समस्याएँ मानवी विकास में बाधा पहुँचाती हैं । शुक्ल जी ने समस्याओं के लिए जगह जगह पर समाधान भी ढूंढने का प्रयत्न किया है ।

# संदर्भ-सूची



| अ.नं. | लेखक का नाम | पुस्तक का नाम | पृष्ठ क्रमांक |
|---|---|---|---|
| 1. | डॉ. वाय बी. धुमाळ, | साठोत्तरी हिंदी-मराठी के सामाजिक उपन्यासों का प्रवृत्तिमूलक तुलनात्मक अध्ययन | पृ. 44 |
| 2. | श्रील ल शुक्ल, | 'बिस्रामपुर का संत' | पृ. 14 |
| 3. | वही, | वही, | पृ. 15 |
| 4. | बाबुराम गुप्त, | उपन्यासकार नागार्जुन | पृ. 73, 74 |
| 5. | श्रीलाल शुक्ल, | 'बिस्रामपुर का संत' | पृ. 160 |
| 6. | वही, | वही, | पृ. 79 |
| 7. | वही, | वही, | पृ. 9 |
| 8. | वही, | वही, | पृ. 206 |
| 9. | वही, | वही, | पृ. 120 |
| 10. | वही, | वही, | पृ. 120 |
| 11. | संपादक डॉ. रामदशरथ मिश्र, | हिंदी उपन्यास के सौ वर्ष | पृ. 112 |
| 12. | श्रीलाल शुक्ल, | 'बिस्रामपुर का संत' | पृ. 189 |
| 13. | वही, | वही, | पृ. 180 |
| 14. | वही, | वही, | पृ. 185 |
| 15. | वही, | वही, | पृ. 185 |
| 16. | वही, | वही, | पृ. 63 |
| 17. | वही, | वही, | पृ. 196 |
| 18. | वही, | वही, | पृ. 124 |
| 19. | वही, | वही, | पृ. 126 |

| अ.नं. | लेखक का नाम | पुस्तक का नाम | पृष्ठ क्रमांक |
|---|---|---|---|
| 20. | वही, | वही, | पृ. 131 |
| 21. | श्रीलाल शुक्ल, | 'बिस्रामपुर का संत' | पृ. 45 |
| 22. | वही, | वही, | पृ. 45 |
| 23. | डॉ. वा.ब्री. धुमाळ, | साठोत्तरी हिंदी और मराठी के सामाजिक उपन्यासों का प्रवृत्तिमूलक तूलनात्मक अध्ययन | पृ. 96 |
| 24. | श्रीलाल शुक्ल, | 'बिस्रामपुर का संत' | पृ. 27 |
| 25. | वही, | वही, | पृ. 58 |
| 26. | वही, | वही, | पृ. 59 |
| 27. | वही, | वही, | पृ. 116 |
| 28. | वही, | वही, | पृ. 113 |
| 29. | वही, | वही, | पृ. 52 |
| 30. | वही, | वही, | पृ. 161 |